पद ४०

(राग: जोगिया - ताल: धुमाळी)

ज्याचा देहचि निर्विकल्प गाजे। ज्यासी सदुरु नाम हें साजे। ज्यासी पाहतांचि आत्मबोध माजे। हेचि अवधूत श्रीदत्तराजे।।धू.।। ज्याच्या दृष्टीसी ही सृष्टि नाहीं। ज्याच्या कृपेचा चोज सांगू कायी। देहभोग विदेह सुख लाही। रूप पाहतांचि ब्रह्मसुख लाजे॥१॥ ज्ञानमार्तांड हा उगवला। मूळ जीवा अज्ञान ग्रासियेला। आहे नाहीं हा एक दादूला। एक छत्र स्वरूप विराजे॥२॥